बत्तखें गीली क्यों नहीं होतीं?

ऑगस्टा, चित्र : लियोनार्ड के.

हिंदी : विदूषक

बत्तखें पानी की चिड़ियें होती हैं.

पूरे दिन वो पानी में अन्दर-बाहर आती-जाती हैं. कभी अन्दर, तो कभी बाहर.

वो चाहें कितनी बार पानी में जाएँ, बत्तखें कभी गीली नहीं होतीं.

बत्तखें वाटर-प्रूफ होती हैं.

हरेक बत्तख वाटर-प्रूफ इसलिए होती है क्यूंकि उसकी पूँछ के पास तेल-ग्रंथियां (ग्लैंडस) होती हैं.

अपनी चौड़ी चोंच से बत्तख, उन तेल-ग्रंथियों को चाटती है. फिर वो उस तेल को अपने सारे पंखों पर रगड़ती है. चोंच से पंख संवारने को “प्रीनिंग” कहते हैं.

बत्तखें, चोंच से अपने पंख संवारने में, घंटों बिताती हैं. इस प्रकार वो अपने पंखों को तेल से ढंकती हैं.

बत्तखों के पंख इसलिए गीले नहीं होते हैं क्यूंकि तेल और पानी आपस में मिलते / घुलते नहीं हैं. बत्तखों के पंखों पर गिरा पानी, तेल के कारण एकदम फिसल जाता है.

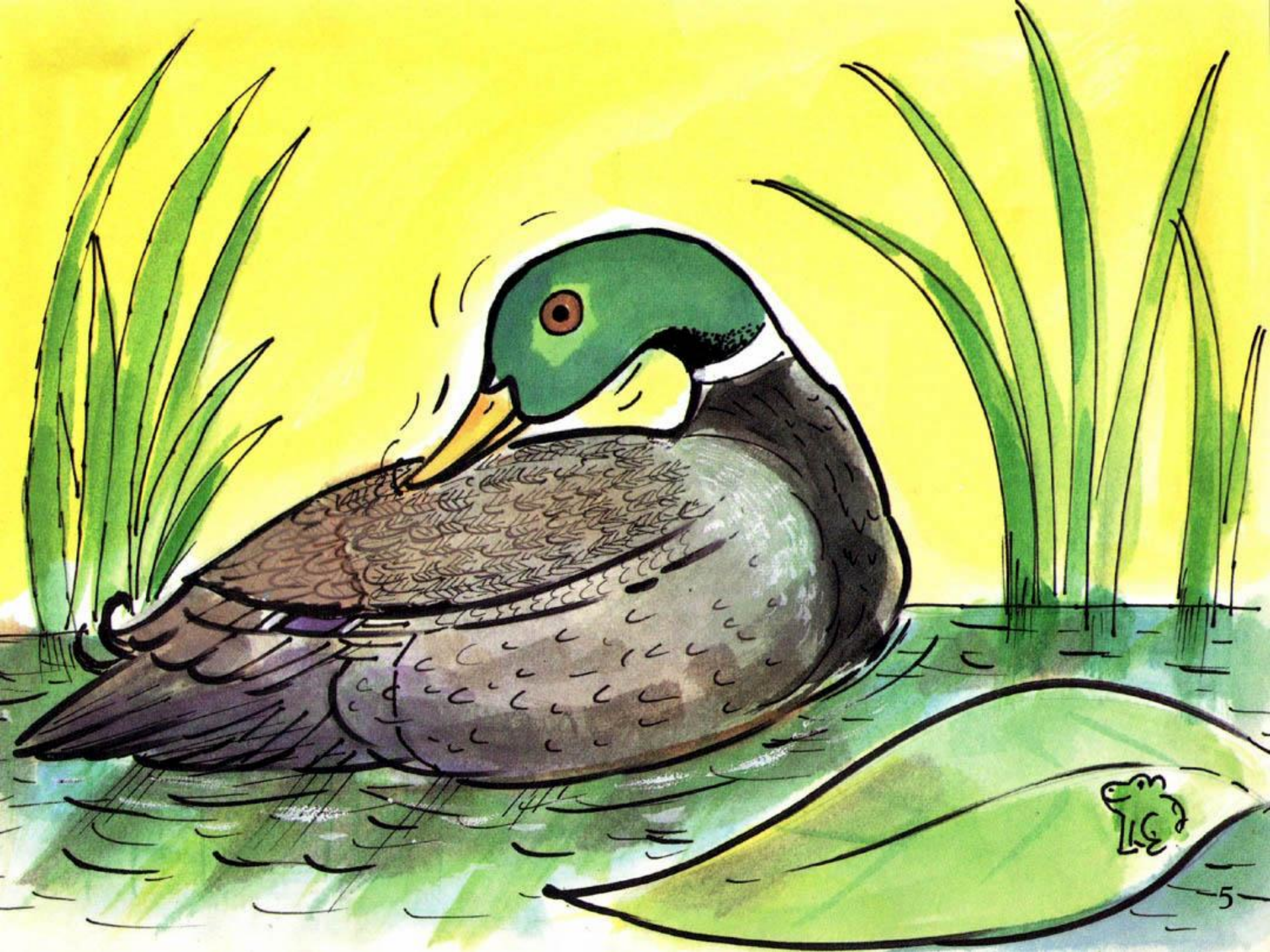

आप चाहें तो इसे सिद्ध कर सकते हैं.

आसपास के पार्क में से कुछ चिड़ियों के पंख इकट्ठे करें.

फिर एक पंख पर पानी छिडकें. पंख गीला होगा क्यूंकि ज़्यादातर चिड़ियों के पंख वाटर-प्रूफ नहीं होते हैं.

तर्जनी उंगली और अंगूठे को खाने के तेल में डुबोएं. फिर एक दूसरे पंख को, अपनी तेल वाली उँगलियों के बीच में दबाकर खींचे. इसे आप दो-तीन बार दोहराएँ. अब पंख पर तेल की एक पतली तह लग जायेगी.

अब आप दुबारा इस तेल लगे पंख पर पानी छिडकें. तेल लगा पंख पानी से गीला नहीं होगा – क्यूंकि तेल और पानी आपस में घुलते नहीं हैं.

अगर आपको चिड़िया का पंख न मिले, तो भी एक अन्य प्रयोग से आप यह दिखा सकते हैं कि तेल और पानी आपस में मिलते / घुलते नहीं हैं.

भूरे कागज़ की दो थैलियाँ लें. एक थैली पर तेल पोतें. फिर दोनों थैलियों पर पानी छिडकें. तेल लगी थैली गीली नहीं होगी, क्यूंकि तेल और पानी आपस में मिलते / घुलते नहीं हैं.

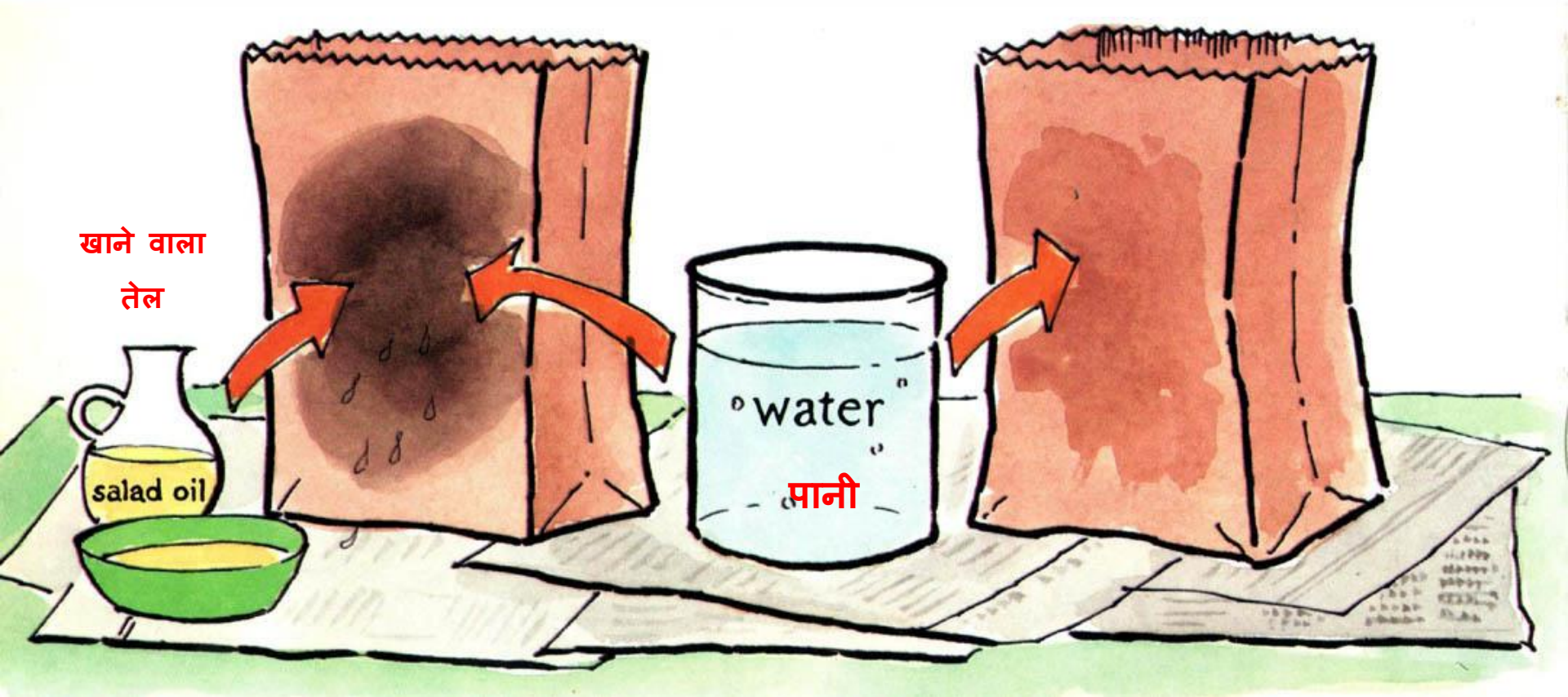

तेल लगे होने के कारण बत्तख के पंखों
के अन्दर पानी नहीं जा सकता है.

बत्तखें अपना ज्यादातर समय पानी में ही गुज़ारती हैं.

वो पोखरों और तालाबों में, छिछले नालों और दलदलों में छपाके मारती हैं. वो पानी भरे डबरों और गड्ढों में पूँछ ऊपर करके खड़ी हो जाती हैं. आपने यह नज़ारा ज़रूर देखा होगा – बत्तख का सिर पानी में, और पूँछ ऊपर हवा में!

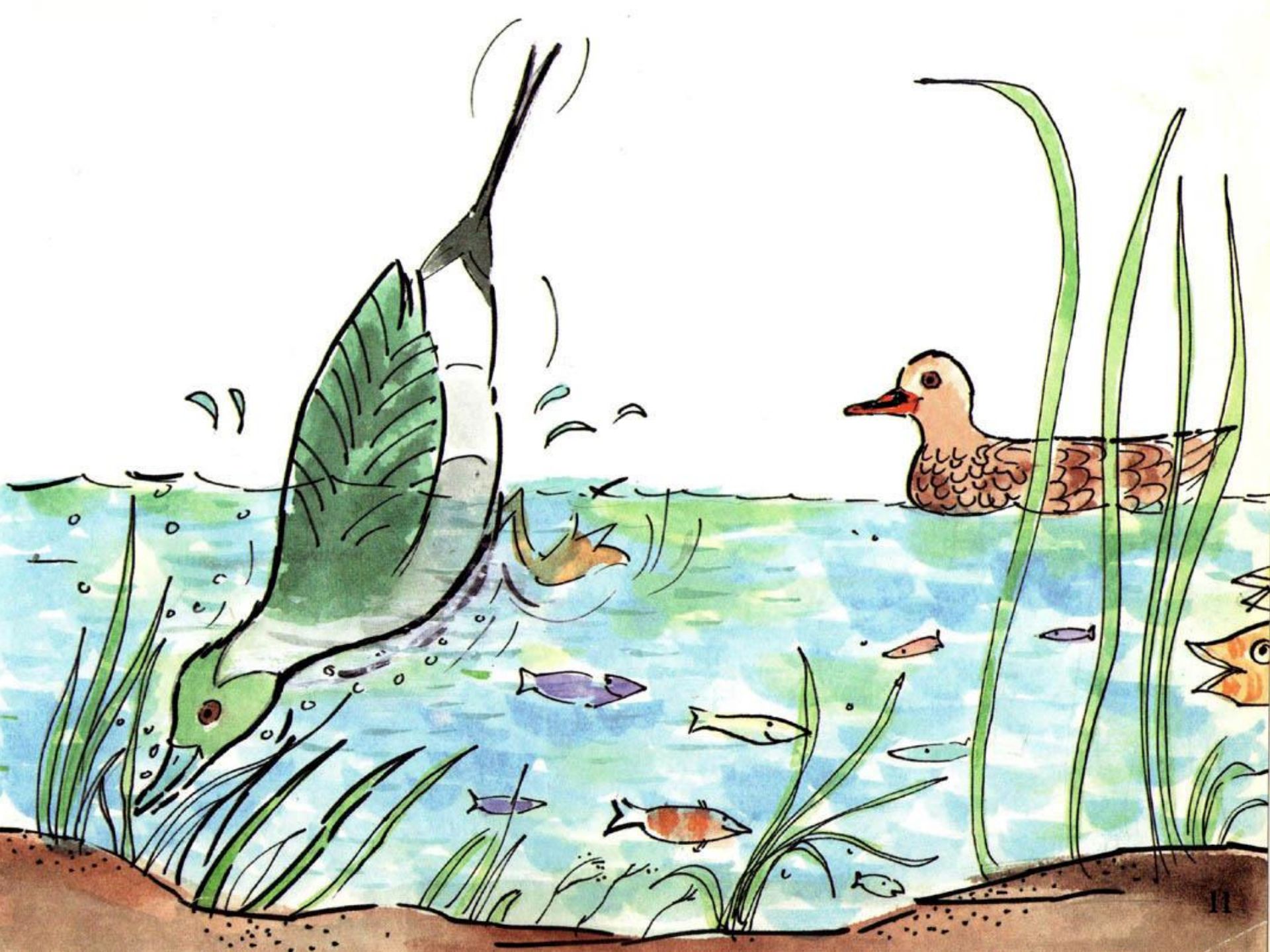

जब बत्तखें ऐसा करती हैं तो असल में वो अपने लिए खाना तलाश रही होती हैं. वो जालीदार पैर चलाकर पानी में आगे बढ़ती हैं और अपनी चौड़ी चोंच से पानी की लम्बी घासों और खरपतवार को खींचती हैं.

पिनटेल और मल्लार्ड बत्तखें पानी में घास और जंगली धान में बीजों और कीड़ों की तलाश करती हैं.

नीले पंखों वाली टील बत्तखें, पानी में जंगली धान के साथ-साथ कीड़े, सीप, क्रे-फिश और केकड़े खोजती हैं.

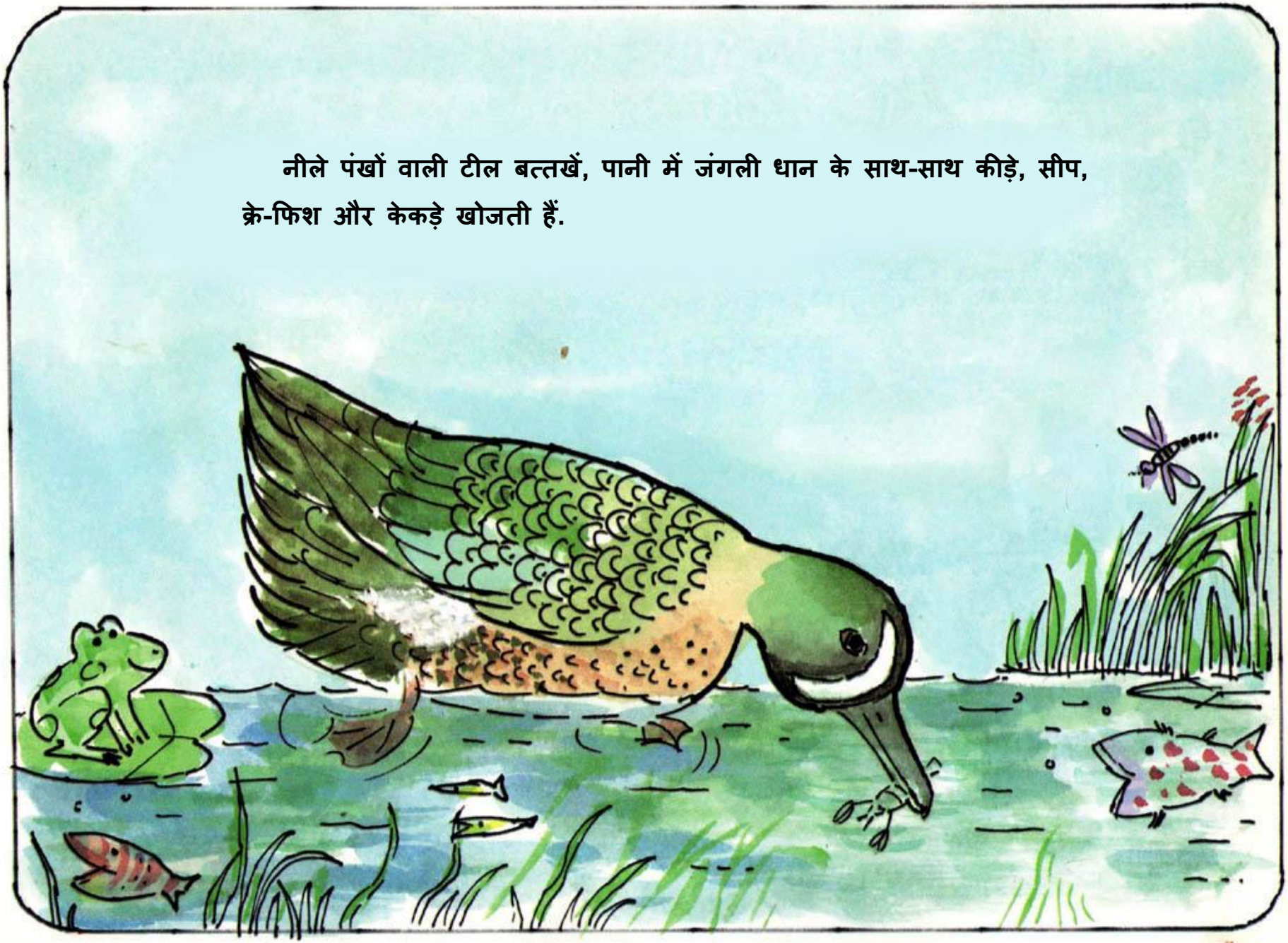

शवलर बत्तखें छिछले पानी में चलती हैं. वो चोंच से तलहटी की मिट्टी खोदकर ऊपर लाती हैं और फिर उसे छानकर उसमें से बीज और पानी के छोटे पौधे खोजती हैं. इसी तरह वे अपनी चोंच से पानी छानकर उसमें कीड़े-मकौड़े और श्रिम्प खोजती हैं.

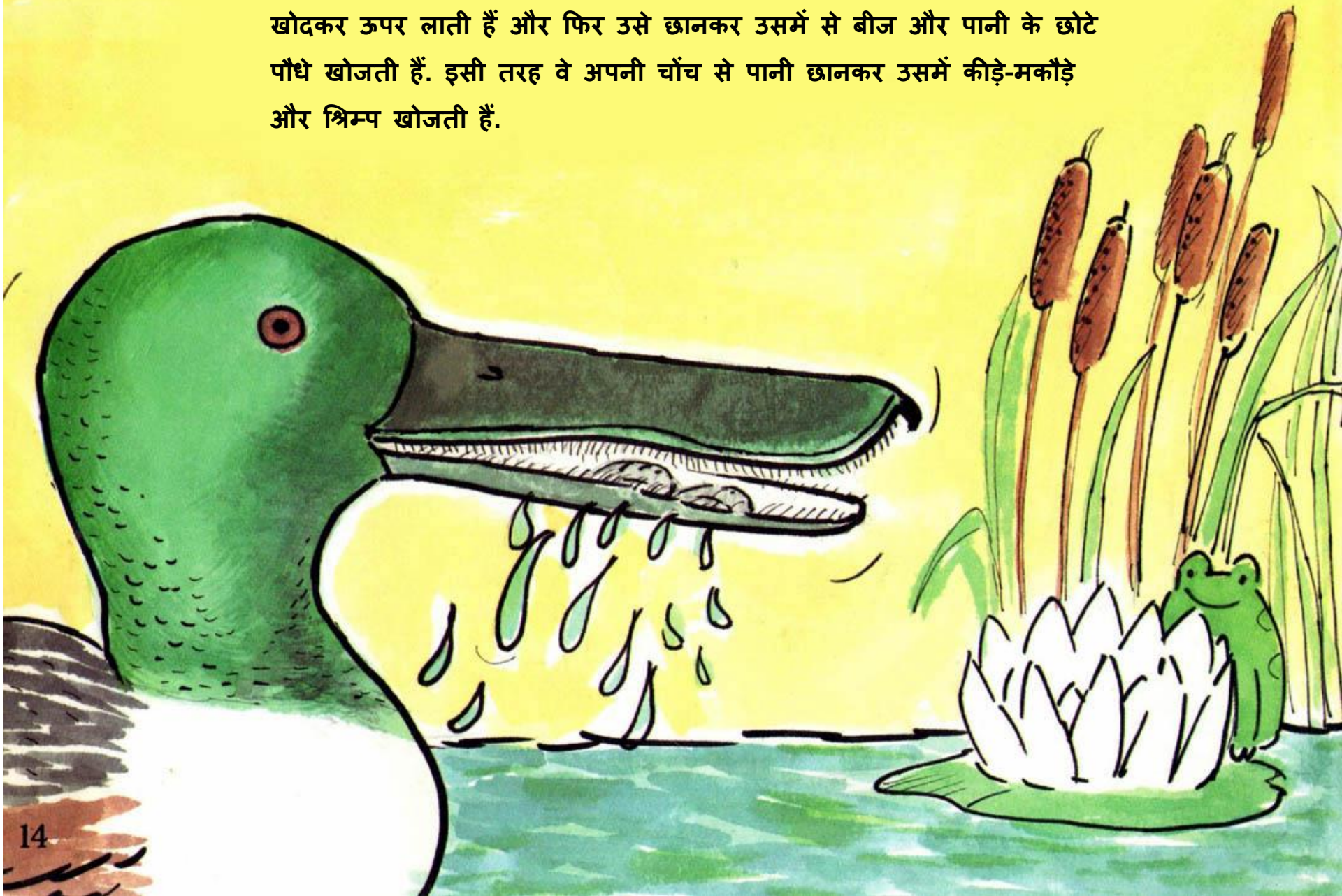

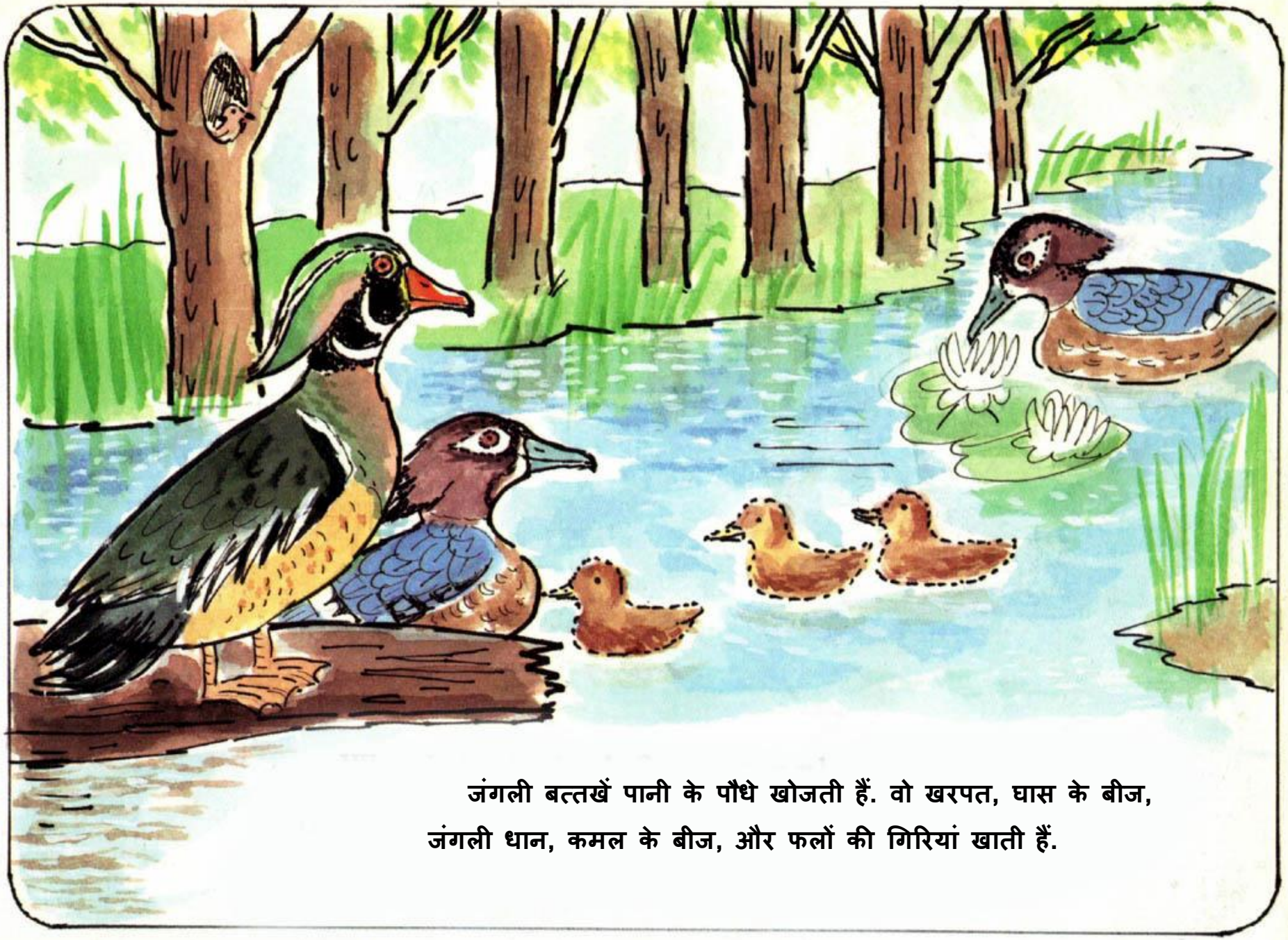

जंगली बत्तखें पानी के पौधे खोजती हैं. वो खरपत, घास के बीज, जंगली धान, कमल के बीज, और फलों की गिरियां खाती हैं.

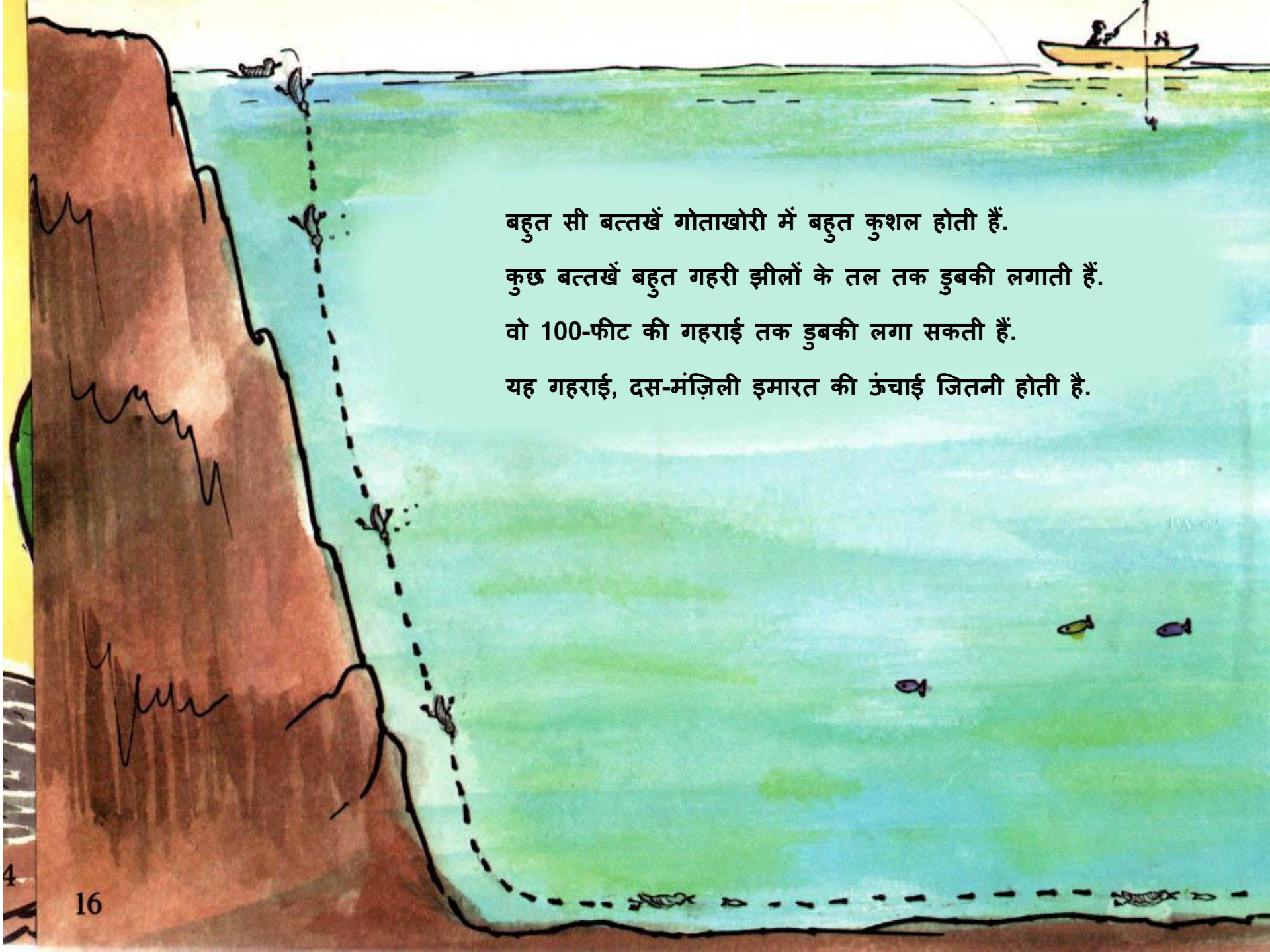

बहुत सी बत्तखें गोताखोरी में बहुत कुशल होती हैं.

कुछ बत्तखें बहुत गहरी झीलों के तल तक डुबकी लगाती हैं.

वो 100-फीट की गहराई तक डुबकी लगा सकती हैं.

यह गहराई, दस-मंज़िली इमारत की ऊंचाई जितनी होती है.

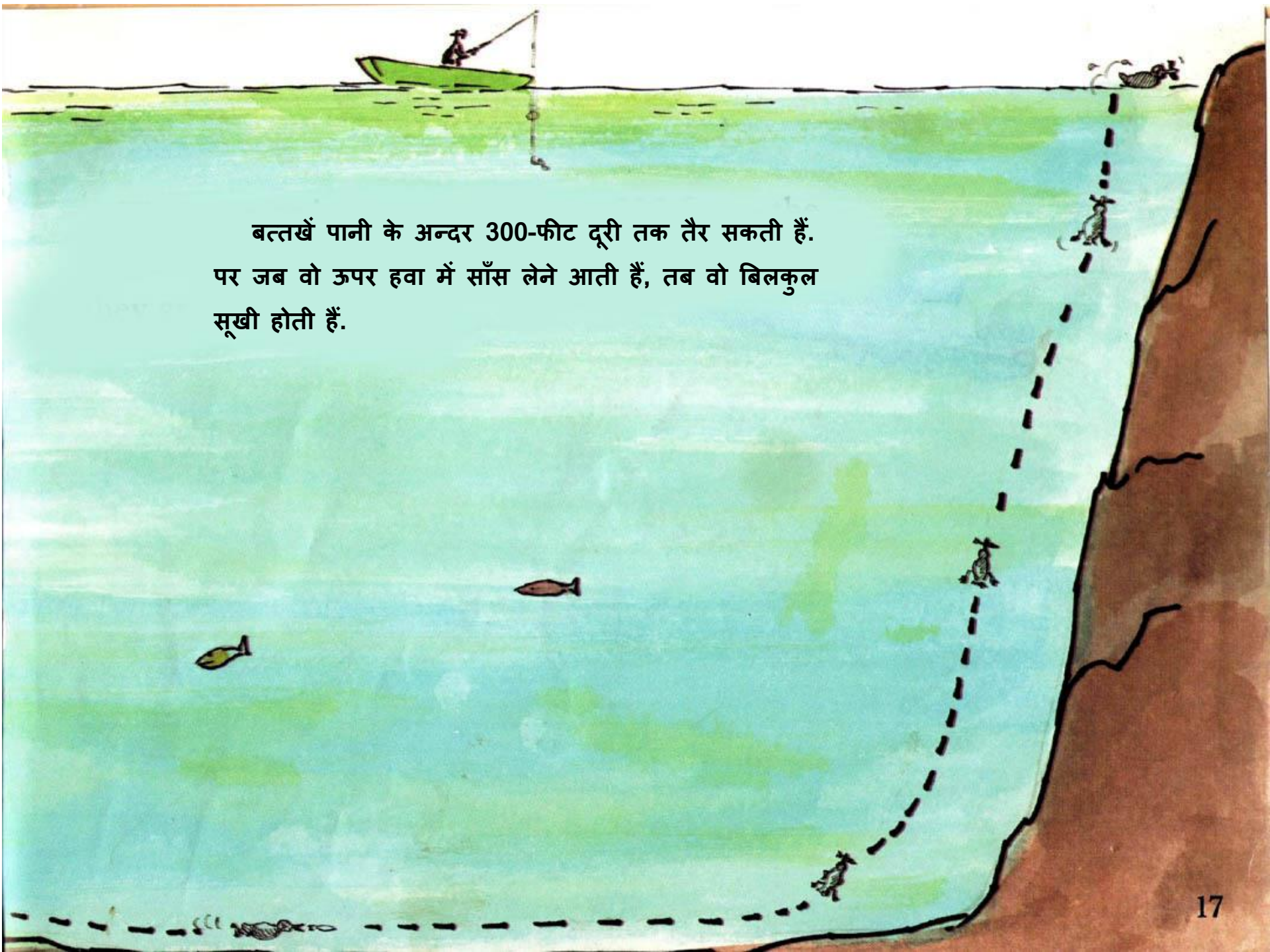

बत्तखें पानी के अन्दर 300-फीट दूरी तक तैर सकती हैं. पर जब वो ऊपर हवा में साँस लेने आती हैं, तब वो बिलकुल सूखी होती हैं.

कैनवसबैक बत्तखें पानी में जंगली अजवायन (सेलरी)
और शैल-फिश के लिए डुबकी लगाती हैं.

हार्लीकुइन बत्तखें पानी में कीड़ों और मछलियों के लिए डुबकी लगाती हैं.

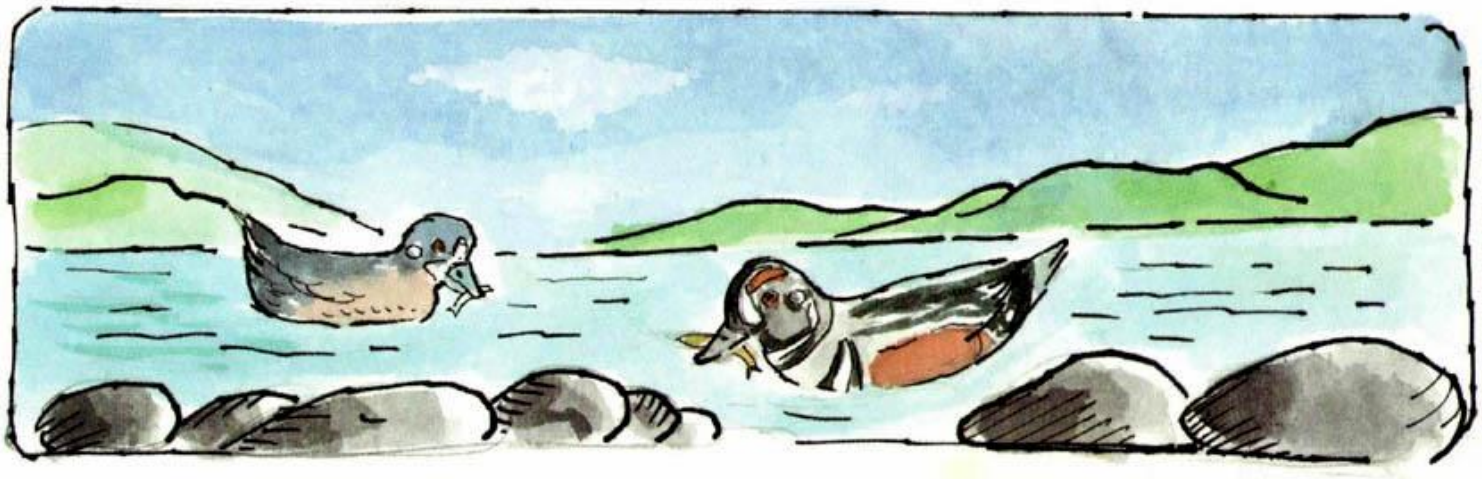

बुफ्फेलहेड बत्तखें भी वही करती हैं.

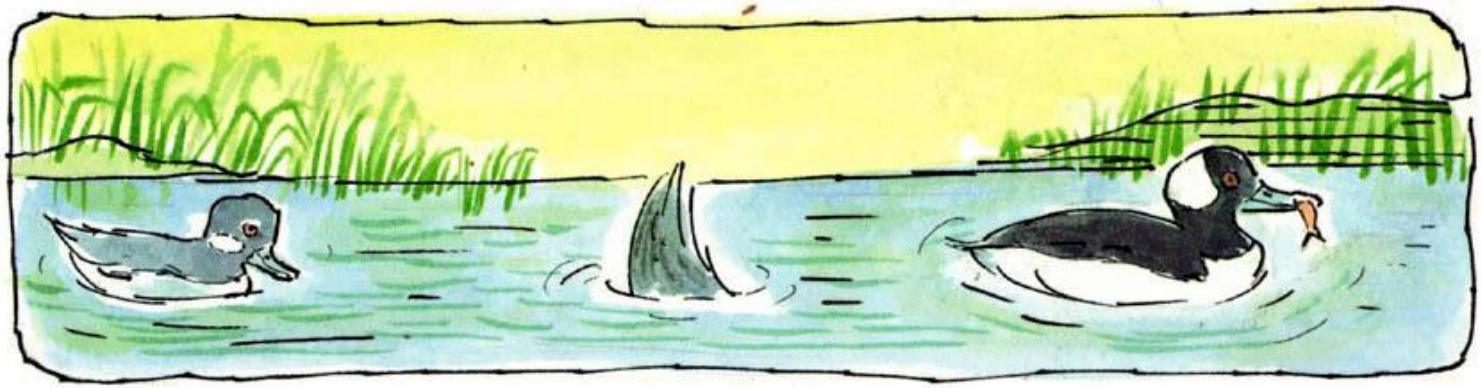

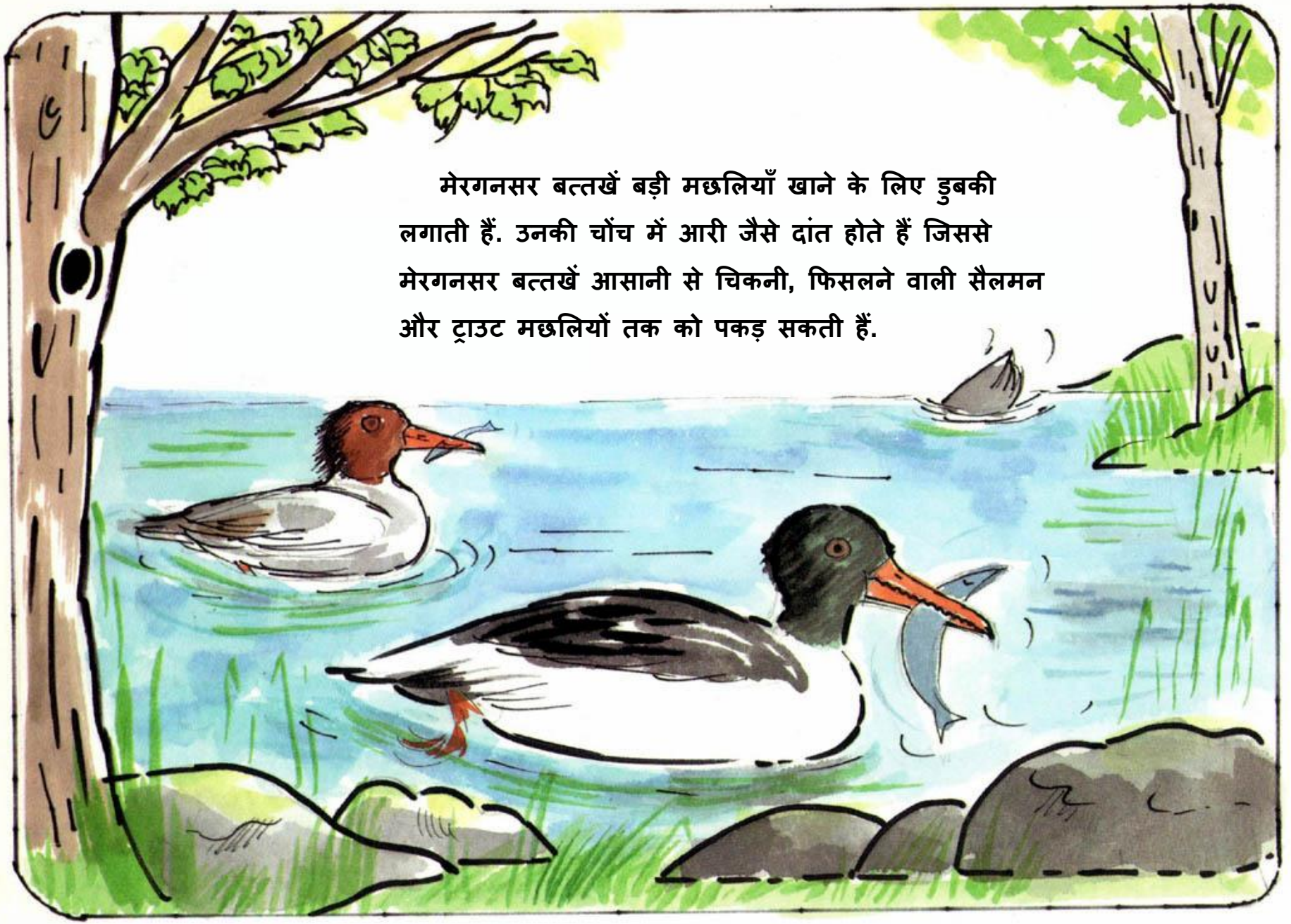

मेरगनसर बत्तखें बड़ी मछलियाँ खाने के लिए डुबकी लगाती हैं. उनकी चोंच में आरी जैसे दांत होते हैं जिससे मेरगनसर बत्तखें आसानी से चिकनी, फिसलने वाली सैलमन और ट्राउट मछलियों तक को पकड़ सकती हैं.

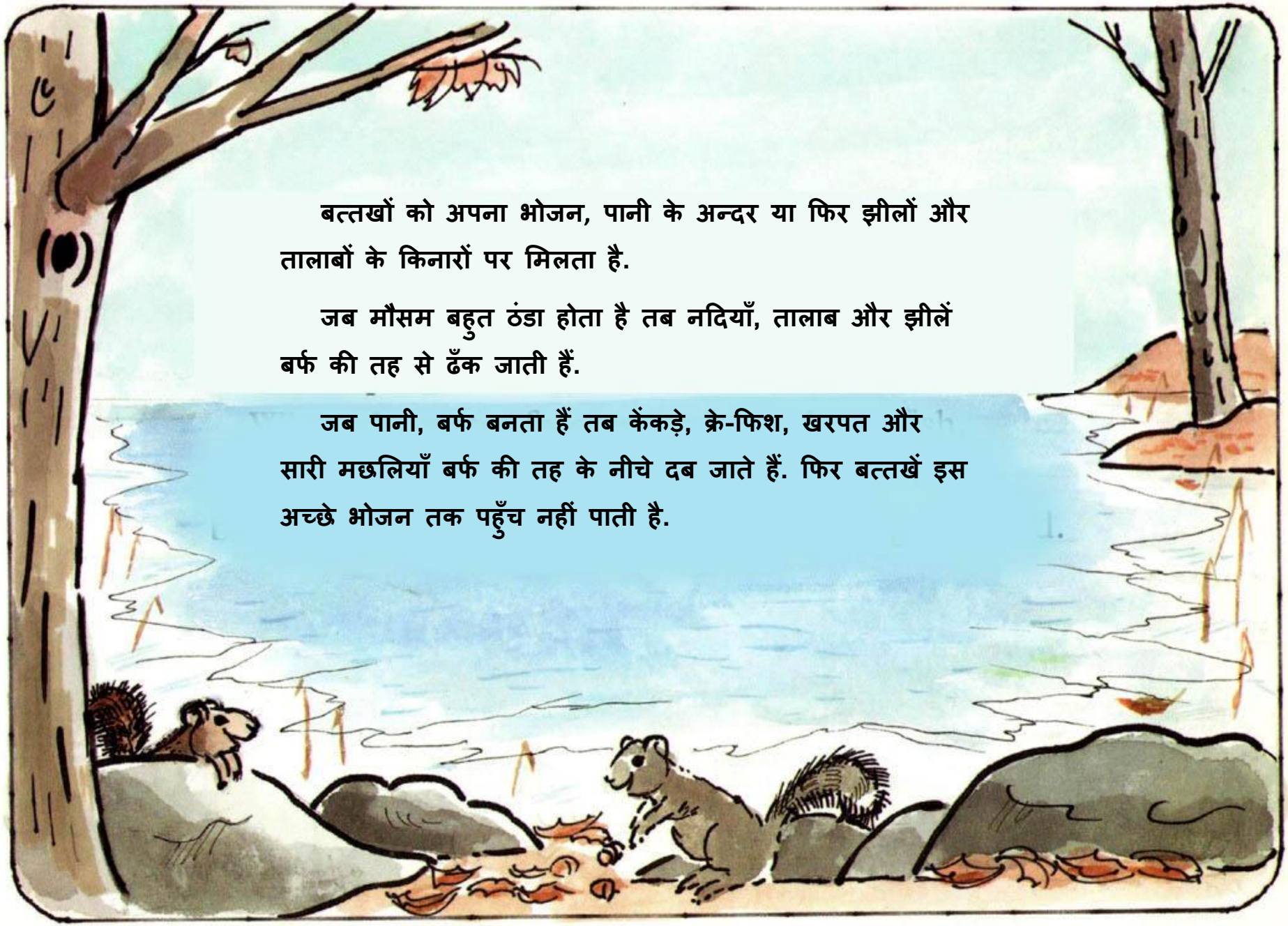

बत्तखों को अपना भोजन, पानी के अन्दर या फिर झीलों और तालाबों के किनारों पर मिलता है.

जब मौसम बहुत ठंडा होता है तब नदियाँ, तालाब और झीलें बर्फ की तह से ढँक जाती हैं.

जब पानी, बर्फ बनता हैं तब केंकड़े, क्रे-फिश, खरपत और सारी मछलियाँ बर्फ की तह के नीचे दब जाते हैं. फिर बत्तखें इस अच्छे भोजन तक पहुँच नहीं पाती है.

भोजन न मिलने की वज़ह से बत्तखें उत्तर से पलायन करती हैं.

वो दक्षिण की तरफ उड़कर जाती हैं – जहाँ उन्हें खाने को मिलता है.

दक्षिण की ओर उड़ती हैं डबब्लिंग बत्तखें –

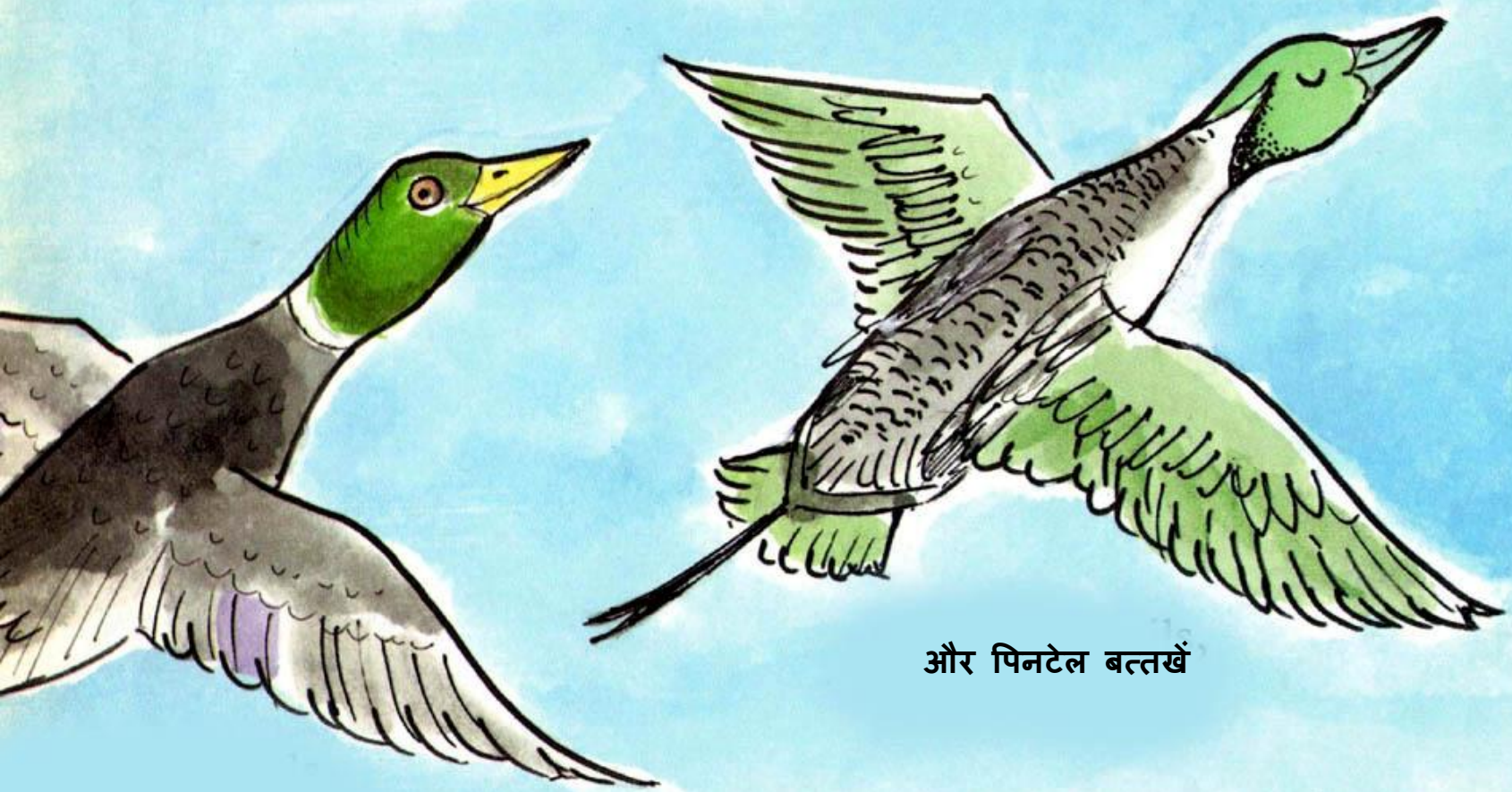

और पिनटेल बत्तखें

और मल्लार्ड बत्तखें

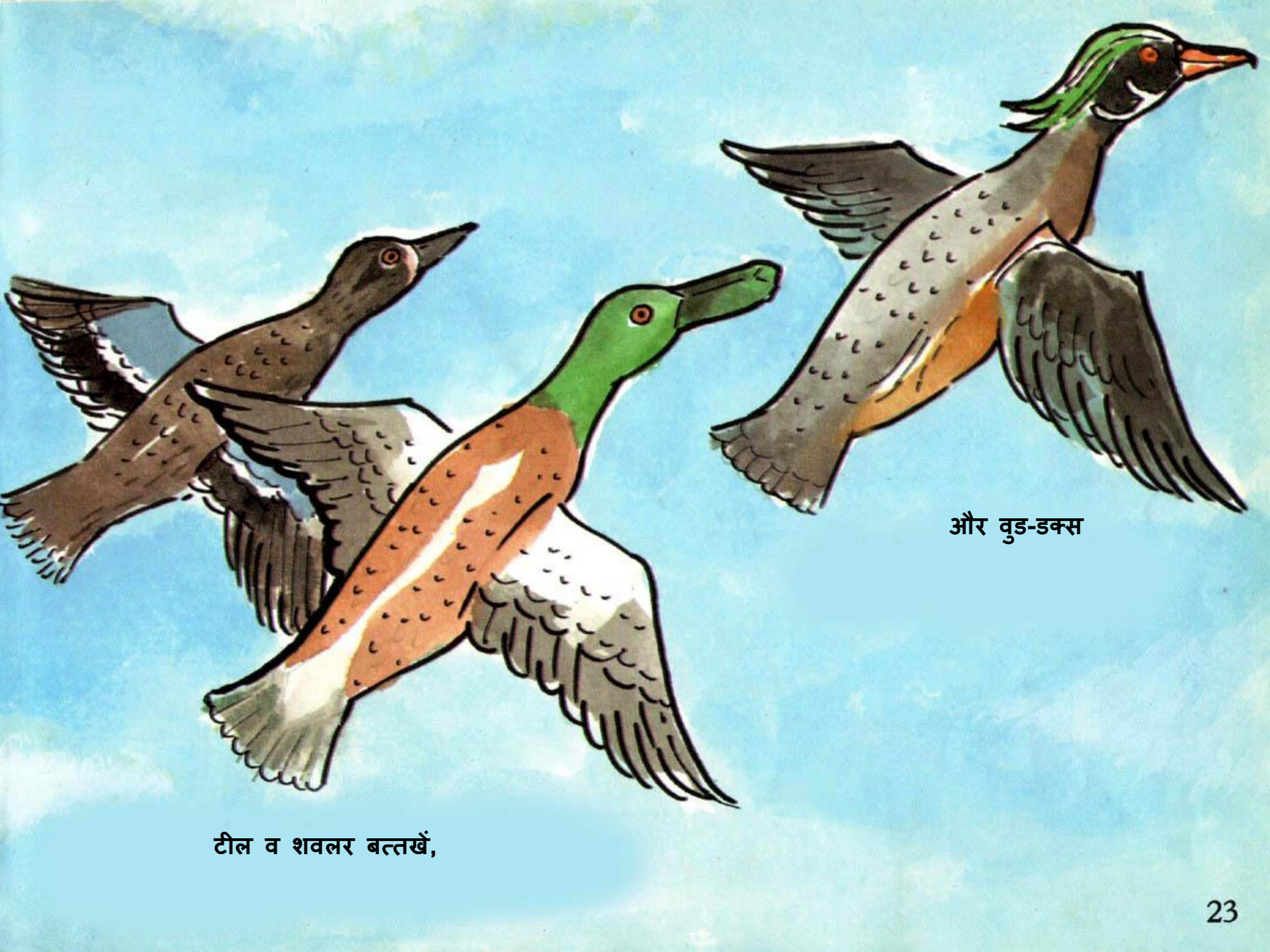

और वुड-डक्स

टील व शवलर बत्तखें,

दक्षिण की ओर उड़ती हैं, गोताखोर बत्तखें –

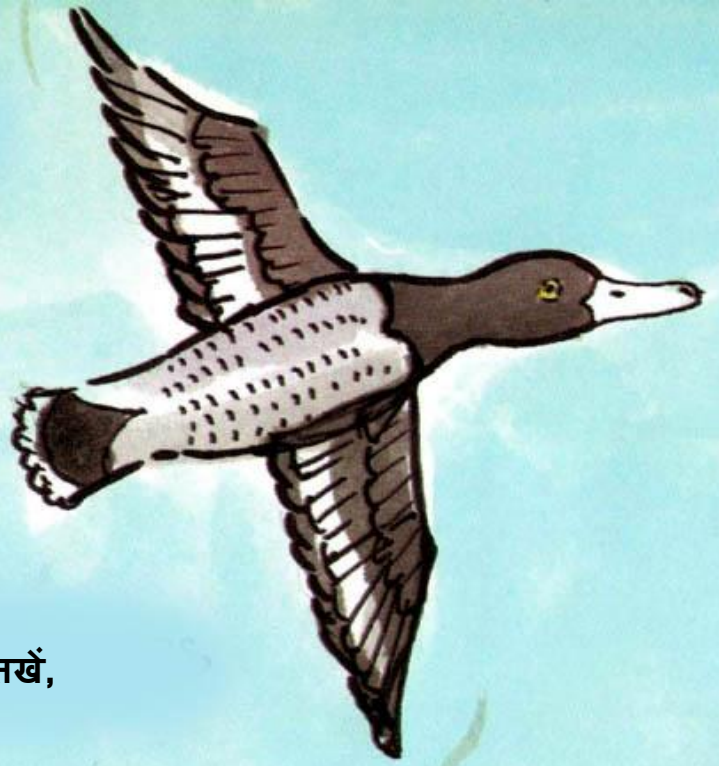

कैनवसबैक और स्काऊपस बत्तखें,

हार्लीकुइन्स और बुफ्फेलहेड बत्तखें,

और मेरगनसर बत्तखें.

ये बत्तखें 50, 60, 70 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से दक्षिण की ओर उड़ती हैं. यह स्पीड तेज़ कार की रफ़्तार जितनी होती है. बत्तखें इतनी तेज़ी से उड़ती हैं.

दक्षिण के खुले पानी में बत्तखों को भरपूर भोजन मिलता है. बत्तखें तूफ़ान और तेज़ धूप में भी अपनी उड़ान ज़ारी रखती हैं. वो तेज़ हवाओं और बारिश में भी उड़ती रहती हैं. बारिश का सारा पानी उनके पंखों से फिसल जाता है.

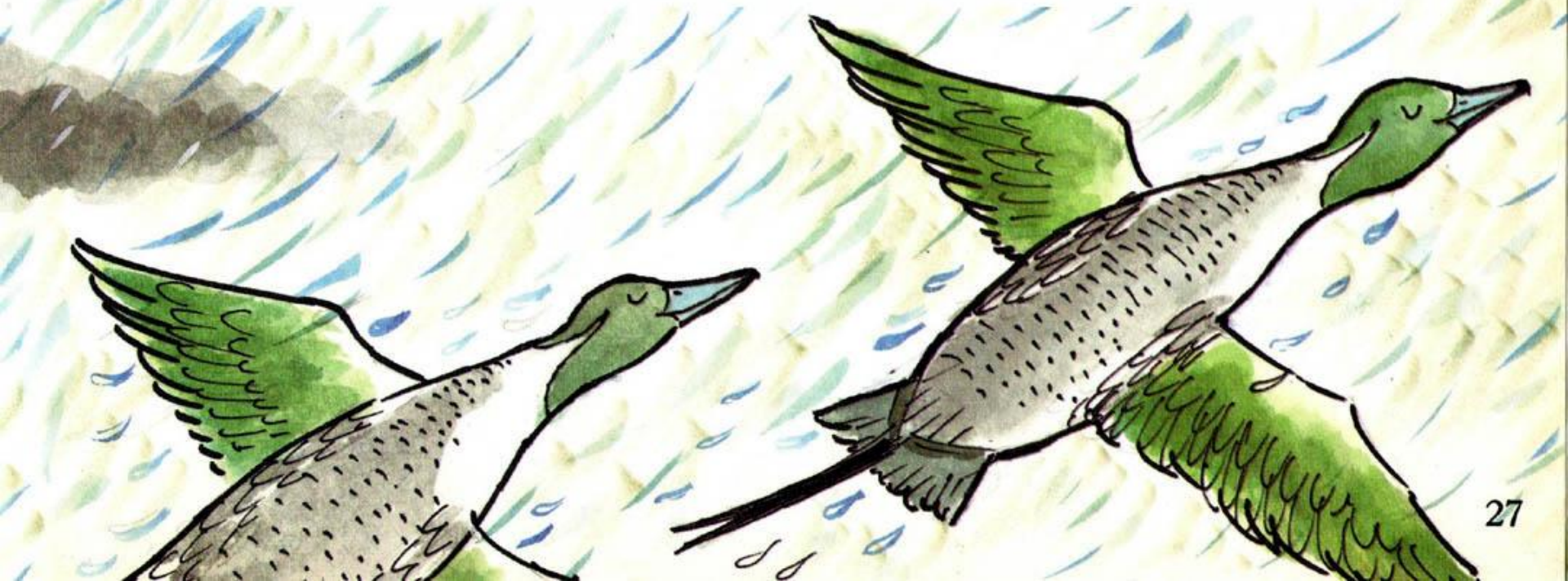

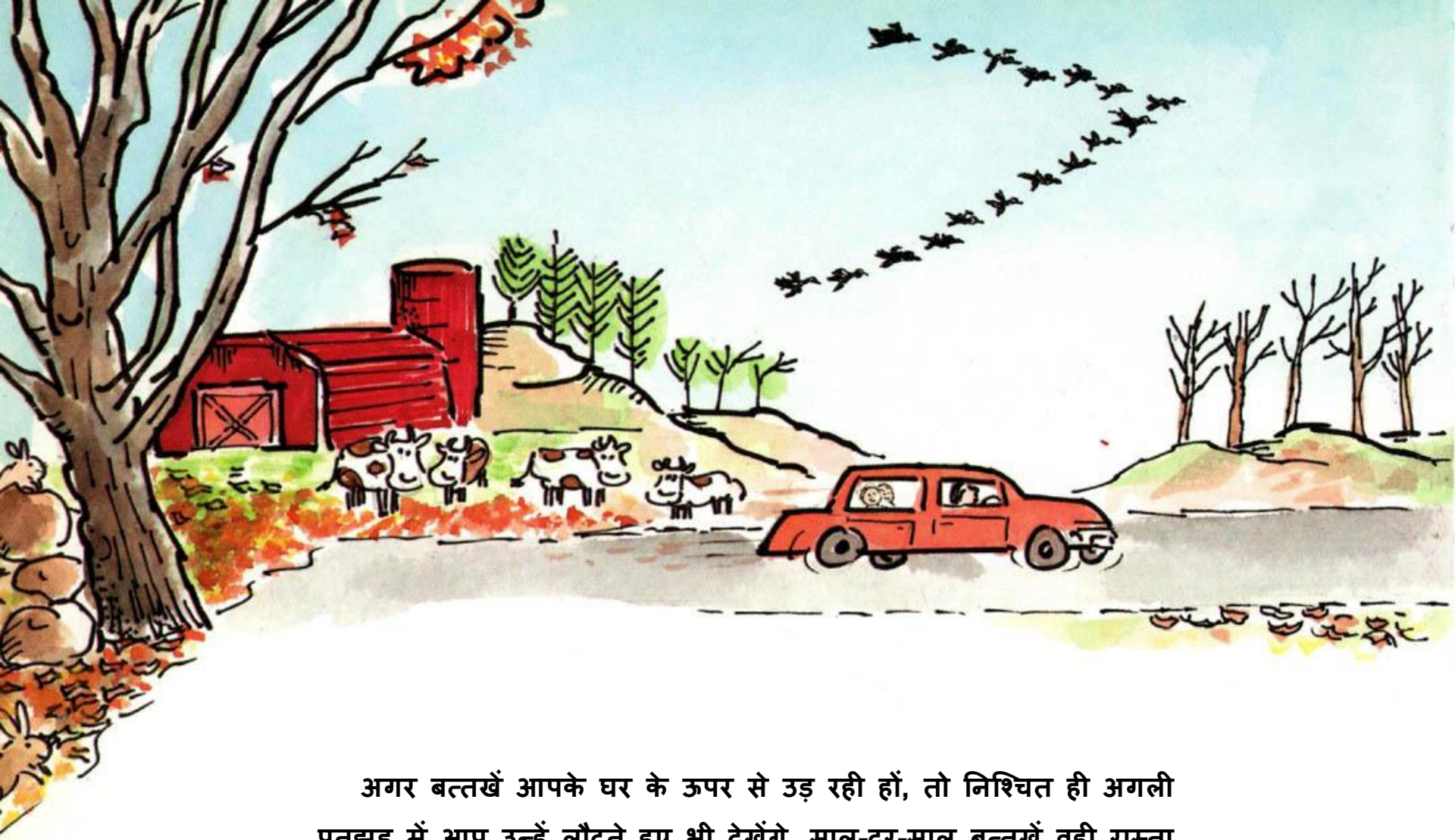

अगर बत्तखें आपके घर के ऊपर से उड़ रही हों, तो निश्चित ही अगली पतझड़ में आप उन्हें लौटते हुए भी देखेंगे. साल-दर-साल बत्तखें वही रास्ता अपनाती हैं. कभी-कभी वो "V" के आकार में उड़ती हैं. बत्तखों का लीडर "V" की नोक पर होता है और बाकी बत्तखें उसके पीछे-पीछे होती हैं.

अगर बत्तखें नीचे उड़ रही होंगी तब आप उन्हें बहुत स्पष्ट देख पाएंगे. आप शायद उनके तेल लगे पंखों से फिसलती हवा की आवाज़ भी सुन पाएं. आप शायद उनके शक्तिशाली पंखों के फड़फड़ाने की आवाज़ भी सुन पाएं.

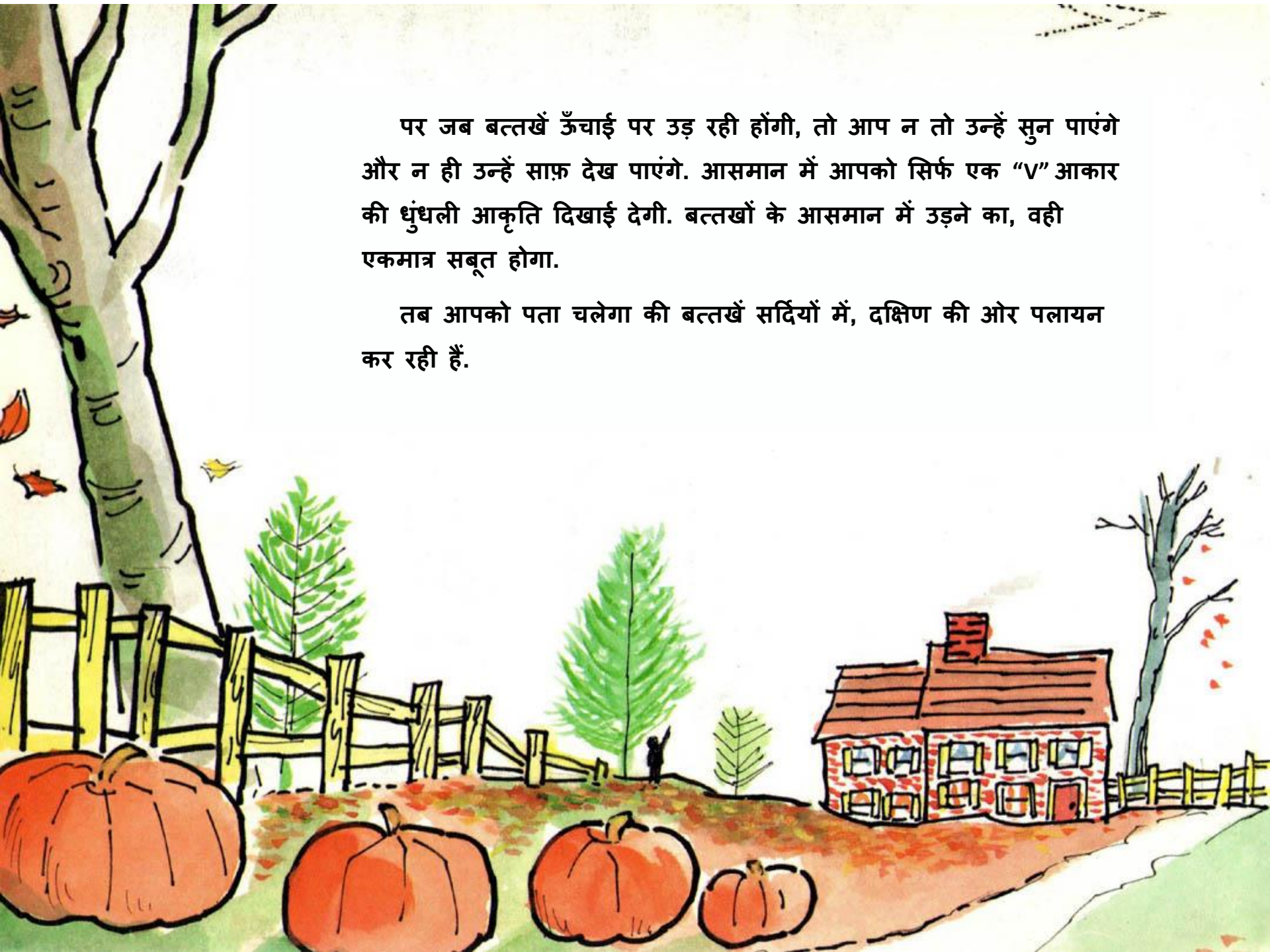

पर जब बत्तखें ऊँचाई पर उड़ रही होंगी, तो आप न तो उन्हें सुन पाएंगे और न ही उन्हें साफ़ देख पाएंगे. आसमान में आपको सिर्फ एक "V" आकार की धुंधली आकृति दिखाई देगी. बत्तखों के आसमान में उड़ने का, वही एकमात्र सबूत होगा.

तब आपको पता चलेगा की बत्तखें सर्दियों में, दक्षिण की ओर पलायन कर रही हैं.

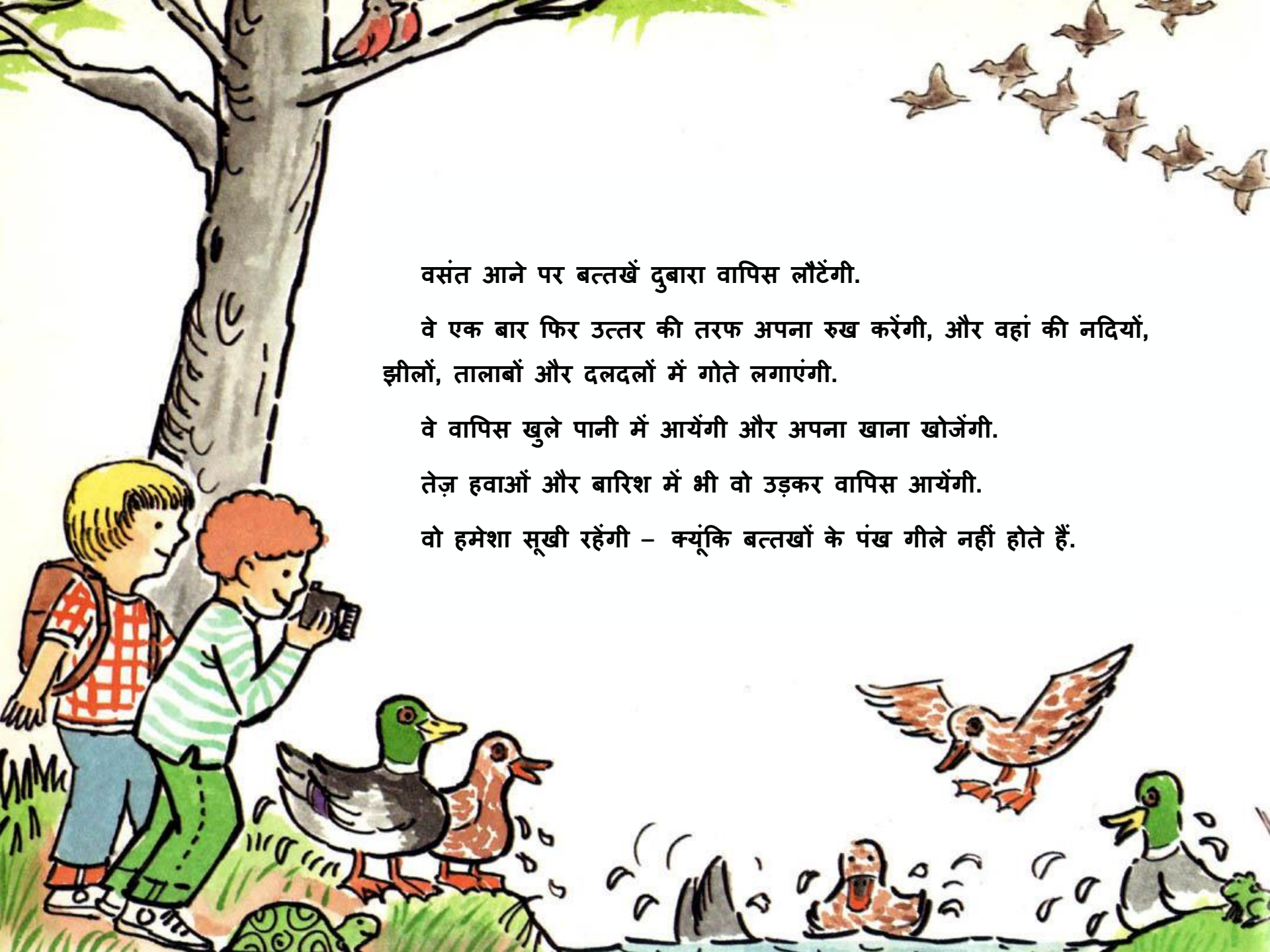

वसंत आने पर बत्तखें दुबारा वापिस लौटेंगी.

वे एक बार फिर उत्तर की तरफ अपना रुख करेंगी, और वहां की नदियों, झीलों, तालाबों और दलदलों में गोते लगाएंगी.

वे वापिस खुले पानी में आयेंगी और अपना खाना खोजेंगी.

तेज़ हवाओं और बारिश में भी वो उड़कर वापिस आयेंगी.

वो हमेशा सूखी रहेंगी – क्यूंकि बत्तखों के पंख गीले नहीं होते हैं.